भी दिखलाई पड़ती है। इस प्रकार, लेखिका ने यहाँ जीव-मनोविज्ञान का बहुत ही सुंदर चित्रण किया है।

पशुओं को शिष्टाचार का ज्ञान नहीं होता; क्योंकि उनकी दुनिया में यह सब नहीं है; किंतु लेखिका ने उसे शिष्टाचार सिखा कर उसे भी मानवीय व्यवहार से अवगत कराया। लेखिका ने यह भी संकेत किया है कि सामान्य शिष्टाचार का व्यवहार सबके लिए अपेक्षित है। किशोर-जीवन में उन्मुक्तता की आकांक्षा होती है, किंतु वह निरंकुश या असंयमित नहीं होनी चाहिए।

प्रेम ऐसा भाव है, जो हमें महान बनाता है। लेखिका की अस्वस्थता में गिल्लू का उनके बालों को हौले-हौले सहलाना प्रेम की उत्कृष्टता का अनुपम नमूना है। गिल्लू का यह सेवा-भाव हमें विस्मित करता है और उसे हम अपना आत्मीय पात्र मानने लगते हैं।

अभी तक तो आपने गिल्लू की रुचि-अरुचि के बारे में पढ़ा। आइए, अब देखें कि गिल्लू के जीवन में आगे किस तरह का बदलाव आता है। लेखिका ने मनुष्य और पशु के बीच विकसित होने वाली संवेदनशीलता और समानुभूति को बड़ी मार्मिकता के साथ चित्रित किया है। लेखिका को मोटर-दुर्घटना में चोट लग जाती है और कुछ दिनों के लिए उसे अस्पताल में रहना पड़ता है। इस बीच गिल्लू बहुत उदास और असहाय महसूस करता है, क्योंकि जो आत्मीयता एवं प्यार उसे लेखिका देती थी, वह किसी अन्य से नहीं मिलता। लेखिका का कमरा खुलने पर वह दौड़ता है, किंतु उसे न पाकर वह वापस अपने झूले पर जाकर बैठ जाता है। यहाँ तक कि लोग उसे काजू खाने के लिए देते हैं, जो उसके खाने की सबसे प्रिय वस्तु थी, पर वह उन्हें भी जस-का-तस छोड़ देता है। इस अंश में गिल्लू मानवता की उस ऊँचाई को छू लेता है, जो आज के समय में मनुष्य में भी शायद धीरे-धीरे कम हो रही है।

इस अंश के माध्यम से लेखिका (मनुष्य) और गिल्लू (पशु) के बीच पनपने वाले प्रेम की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। इस प्रकार के वर्णन से लेखिका ने पशु के भीतर ऐसी मानवीय संवेदना और ऊँचाई भर दी है, जिससे एक छोटा-सा जीव महानता का अधिकारी बन जाता है और हमारे दिल को छू जाता है। मनुष्य और मनुष्येतर प्राणी के बीच विकसित होने वाले प्रेम की इस रेखाचित्र में अद्‌भुत अभिव्यंजना हुई है। बीमारी के समय लेखिका के सिरहाने बैठकर अपने छोटे पंजों से उसके बालों और सिर को सहलाने की क्रिया गिल्लू के भीतर छिपे उस भाव को व्यक्त करती है, जिसमें दुख के समय मनुष्य और मनुष्येतर का भाव मिट जाता है। दोनों एक समान भाव-भूमि पर स्थित हो जाते हैं और दोनों का दुख एक जैसा हो जाता है। इसी प्रकार, गर्मियों में लेखिका की निकटता प्राप्त करने के लिए वह ऐसा अनोखा तरीका निकाल लेता है, जो अपनी संवेदना में हमें गुदगुदाता है। उसके प्रति हम सहज ही आकर्षित हो जाते हैं। वह हमारा बन जाता है और हम उसके। पशु-पक्षी अपनी समस्याओं का समाधान भी खुद ढूँढ लेते हैं। गिल्लू का सुराही के ऊपर लेट जाना इसी बात का प्रतीक है। वह गर्मी से राहत भी पा लेता है और लेखिका से निकटता भी।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-3.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. लेखिका ने गिल्लू के लिए 'अपवाद' शब्द का प्रयोग करके–

   (क) उसके नटखटपन का मज़ाक उड़ाया है। ☐

   (ख) उसके द्वारा पेड़-पौधों को नुकसान पहुँचाने का संकेत किया है। ☐

   (ग) उसके क्रियाकलापों पर गुस्सा प्रकट किया है। ☐

   (घ) अन्य पशु-पक्षियों से उसके क्रियाकलापों को अलग बताया है। ☐

2. लेखिका के प्रति गिल्लू की समानुभूति का पता किस बात से लगता है–

   (क) कमरा खुलने पर दौड़कर आने, पर लेखिका को न पाकर वापस लौट जाने से ☐

   (ख) किसी अन्य व्यक्ति द्वारा काजू देने पर प्रायः उन्हें न खाने से ☐

   (ग) लेखिका के बालों को अपने नन्हे-नन्हे पंजों से सहलाने से ☐

   (घ) लेखिका के पास सुराही पर लेट जाने का तरीका खोजने से ☐

3. मनुष्य की तरह गिल्लू भी अपनी समस्याओं का समाधान कर लेता था– किस घटना से यह पता चलता है?

   (क) थाली में बैठकर खाने से ☐

   (ख) सुराही पर सोने से ☐

   (ग) लेखिका का सिर सहलाने से ☐

   (घ) काजू कम खाने से ☐

3.2.5 अंश-5

आइए, अब हम इस पाठ के शेष अंश 'गिलहरियों के जीवन ..... से ..... विश्वास मुझे संतोष देता है।' अर्थात् अंतिम अंश को एक बार फिर पढ़ लेते हैं।

पिछले अंश में लेखिका ने गिल्लू के जीवन के विविध पक्षों का सुंदर चित्रण करते हुए उसके व्यक्तित्व के विभिन्न महत्त्वपूर्ण पहलुओं को रेखांकित किया है। पाठ के अंतिम अंश में लेखिका ने गिल्लू के जीवन की अंतिम अवस्था का ज़िक्र किया है। इस पाठांश में लेखिका के जीवानानुभव का हमें पता चलता है, जिसमें वह मानवेतर जगत के बारे में गहरी मानवीय दृष्टि का परिचय देती है। उसने इन प्राणियों के विविध क्रियाकलापों

टिप्पणी

के सुंदर चित्रण के साथ यह भी बताया है कि गिलहरी की कुल जीवन-अवधि दो वर्ष की होती है। लेखिका को यह आभास हो गया था कि अब गिल्लू की उम्र पूरी हो चुकी है और अब वह बूढ़ा ही नहीं, बल्कि मृत्यु के निकट पहुँच चुका है। गिल्लू के ठंडे पंजों की पकड़ से लेखिका को उसके विछोह अर्थात् विदा होने का आभास हो जाता है। उसने उसे ठंडक से बचाने के लिए हीटर जलाकर गरमाहट देने का प्रयास किया, किंतु वह तो अब जीवन की अंतिम साँस ले रहा था और प्रातःकाल मृत्यु को प्राप्त हो गया।

गिल्लू की जीवन-अवधि बहुत सीमित थी– कुल दो साल की। इसीलिए, जब उसके जीवन का अंत समय आया तो लेखिका के मन में उसके प्रति प्रेम ही नहीं, उसके बिछुड़ने का दर्द भी प्रकट हो उठा है। इस छोटे से जीवन में वह लेखिका को इतना प्रभावित करता है कि उसकी स्मृति उसके लिए अविस्मरणीय हो जाती है।

हम किसी की याद को यादगार बनाए रखने के लिए समाधि बनाते हैं। आपने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पं. जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गाँधी आदि की या कोई अन्य समाधि देखी होगी। गिल्लू की याद में लेखिका ने सोनजुही की लता के बीच एक समाधि बनवाई, क्योंकि गिल्लू को सोनजुही की लता सबसे अधिक प्रिय थी।

उसकी मृत्यु के पश्चात् लेखिका ने उसका झूला उतरवा कर रखवा दिया और खिड़की की जाली भी बंद करवा दी, जिससे बाहर निकलकर वह अन्य गिलहरियों से मिलने-जुलने जाया करता था। इस अंश में लेखिका और गिल्लू के बीच आत्मीय भाव और वियोगजन्य उदासी का सुंदर चित्रण मिलता है। गिल्लू का दो वर्ष का साथ लेखिका के जीवन को इस कदर प्रभावित करता है कि वह उसके असहनीय वियोग से दुखी होती है। उसकी स्मृति को अपने मन में स्थायी बनाए रखने के लिए वह गिल्लू की समाधि वहीं बनवाती है, जहाँ वह छाया में छिपकर बैठता था और अचानक लेखिका के ऊपर कूदकर उसे चौंका देता था। अपने इस छोटे से जीवन में गिल्लू ने लेखिका के ऊपर ऐसी अमिट छाप छोड़ी कि वह उसकी स्मृति को कभी नहीं भुला सकी। जुही के उस पीले फूल में लेखिका को बार-बार ऐसा आभास होता है कि कहीं फूल के रूप में गिल्लू ही तो नहीं प्रकट हुआ? गिल्लू की यह अविस्मरणीय (कभी न भूलने वाली) याद उसकी स्मृति को हमेशा के लिए सजीव बना देती है– लगता है कि हमारी आँखों के सामने जीता-जागता गिल्लू उछल-कूद करते हुए हमें जीवन में सक्रिय रहने की प्रेरणा दे रहा है।

लेखिका ने गिल्लू की मृत्यु का भी बहुत ही मार्मिक वर्णन किया है। आमतौर पर हम अपने किसी बहुत ही प्रिय की मृत्यु के बाद यह नहीं कहते कि 'वह मर गया' या 'वह मर गयी'। सामान्य शिष्टाचार और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में भी हम उसके लिए इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करते हैं जैसे—'वे हमेशा हमेशा के लिए सो गये', 'भगवान को प्यारे हो गये', 'हमें छोड़कर चली गई', 'उनका स्वर्गवास हो गया'। लेखिका ने प्रेम के वशीभूत होकर ही गिल्लू के लिए यह वाक्य प्रयोग किया है—'वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।'

टिप्पणी

3.2.6 भाषा-शैली

आइए, अब हम इस रेखाचित्र की भाषा-शैली की विशेषताओं पर विचार करते हैं। इस रेखाचित्र के विषय में आपने यह महसूस किया होगा कि इसे पढ़ना शुरू करें तो पूरा पढ़ जाने की इच्छा होती है। क्या आपने सोचा कि ऐसा क्यों हुआ? वास्तव में इसका एक कारण यह है कि यह रेखाचित्र रोचक तो है ही, इसकी भाषा भी बहुत ही सरल, सरस और प्रवाहपूर्ण है। लेखिका ने इसमें आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है अर्थात्, हमारे दैनिक जीवन में जिन शब्दों का प्रयोग होता है, उन्हीं शब्दों का प्रयोग लेखिका ने किया है। इसमें तत्सम शब्दों का प्रयोग भी है, इसके अतिरिक्त आम बोलचाल में आने वाले अंग्रेज़ी एवं अन्य भाषाओं के कुछ शब्द भी हैं। ये सभी शब्द इस रेखाचित्र में सहज रूप में आ गए हैं। इसीलिए भाषा में स्पष्टता बनी रहती है।

तत्सम–	संधि, जीव, दृष्टि, संभवतः, सुलभ, आहार, लघुप्राण, निश्चेष्ट, रक्त, उपचार, उपरांत, आश्वस्त, मास, स्निग्ध आदि।
तद्भव–	मिट्टी, बत्ती, मुँह, घर, पत्तियाँ, उँगली, हाथ आदि।
देशज–	झब्बेदार, चौंकाना, काँव-काँव, चिक्-चिक्, झुंड आदि।
आगत–	पेन्सिलिन, गमला, दीवार, हौले, तेज़ी, लिफ़ाफ़ा, मेज़, बिस्कुट, जाली, कॉलेज, फूलदान, मोटर आदि।

इस रेखाचित्र की भाषा की दूसरी महत्त्वपूर्ण विशेषता है— सरसता। इसका मतलब यह है कि इसकी भाषा में ऐसी अभिव्यक्तियों और वाक्यांशों का प्रयोग किया गया है, जिससे पढ़ते समय आनंद की अनुभूति होती है। सरसता का गुण न होने के कारण हम किसी पाठ को थोड़ा-सा पढ़ने के बाद ही ऊब जाते हैं और उसे पढ़ने में अरुचि और आलस्य होने लगता है। लेकिन, 'गिल्लू' को पढ़ते समय हमें इस प्रकार का बोध बिल्कुल नहीं होता। हमारे समक्ष गिल्लू के रूप-रंग, व्यवहार और गतिविधियों के चित्र उभरने लगते हैं और हम जैसे ख़ुद ही इन दृश्यों को देखने वाले बन जाते हैं। हमारा मन कभी लेखिका, तो कभी गिल्लू की अनुभूति के साथ जुड़ जाता है। हम उनके दुख से दुखी और उनकी प्रसन्नता में खुश होने लगते हैं।

इसकी भाषा की तीसरी महत्त्वपूर्ण विशेषता है— प्रवाहपूर्णता अथवा प्रवाहमयता। प्रवाहपूर्णता भाषा का वह गुण है, जो किसी रचना को हमें निरंतरता में पढ़ने के लिए बाध्य कर देता है। जैसे नदी में पानी का प्रवाह होता है, वैसे ही भाषा में भी प्रवाह होता है। यह प्रवाह शब्दों के चयन और उनके सटीक प्रयोग से आता है। महादेवी वर्मा ने भाषा के इन पक्षों का ध्यान रखा है, इसीलिए उनकी भाषा में प्रवाह आ गया है।

इस रेखाचित्र की शैली कुछ आत्मकथात्मक-सी है। वास्तव में, जब लेखक अपने अविस्मरणीय क्षणों के अनुभव को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करता है, तो वह आत्मकथात्मक-सा ही होता है। आत्मकथात्मक शैली का मतलब होता है, अपने अनुभव

को इस प्रकार व्यक्त करना कि उसमें अपना व्यक्तित्व भी आ जाए। कई बार हम बात किसी और के बारे में करते हैं, किंतु उसके माध्यम से अपनी बात भी व्यक्त हो जाती है।

रेखाचित्र में लेखक शब्दों के माध्यम से किसी वस्तु या व्यक्ति का एक चित्र प्रस्तुत करता है और अपनी भाषा-शैली के कौशल से उसे जीवंत बना देता है। उसके शब्दों और वर्णन-शैली में इतनी कलात्मकता होती है कि हमारी आँखों के सामने उस वस्तु या व्यक्ति का समग्र चित्र उपस्थित हो जाता है। इस रेखाचित्र में भी लेखिका महादेवी वर्मा ने एक कुशल चित्रकार के समान छोटे-छोटे चित्रों से गिल्लू का चित्रण करते हुए उसके भीतर छिपी संवेदनाओं को प्रभावशाली रूप में व्यक्त किया है। इस रेखाचित्र में उनकी शैली भावात्मक और विचारात्मक दोनों रूपों में मिलती है। पशु-प्रवृत्ति के संबंध में उनकी निरीक्षण-दृष्टि सराहनीय है। गिल्लू जैसे उपेक्षित प्राणी के चित्र को अपने असीम स्नेह से रँगकर लेखिका ने इस प्रकार व्यक्त किया है कि हम उससे एक गहरी आत्मीयता का अनुभव करने लगते हैं।

आपने ध्यान दिया होगा कि इस रेखाचित्र की शुरुआत सोनजुही की लता में खिले पीले फूल से हुई है। इसे देखते हुए लेखिका को गिल्लू की याद आती है, जो अब दिवंगत हो चुका है। फिर वह उसके मिलने के दिन से मृत्यु तक की बातों का स्मरण करती है। अंत में पुनः उसी दृश्य से वर्तमान समय में लौटती है। इस प्रकार, पीछे लौटने के तरीके को साहित्य और फ़िल्म की भाषा में 'फ़्लैश बैक टेक्नीक' यानी 'पूर्वदीप्ति तकनीक' कहा जाता है। इस रेखाचित्र में इस तकनीक का बहुत सुंदर उपयोग किया गया है।

पाठगत प्रश्न-3.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'गिल्लू' रेखाचित्र का अंत—

   (क) भावुकतापूर्ण है ☐ (ख) वैचारिक है ☐

   (ग) हताशाजन्य है ☐ (घ) उत्साहजनक है ☐

2. गिल्लू ने अपने अंतिम समय में लेखिका की उँगली क्यों पकड़ ली थी?

   (क) वह लेखिका से पुनः प्राण-रक्षा की अपेक्षा करता था। ☐

   (ख) वह लेखिका के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट कर रहा था। ☐

   (ग) वह लेखिका के हाथ से काजू खाना चाहता था। ☐

   (घ) वह लेखिका की उँगली पकड़कर मरना चाहता था। ☐

टिप्पणी

3. 'गिल्लू' रेखाचित्र की भाषा में कौन-सा गुण नहीं है—

(क) सहजता (ख) सरसता

(ग) दृश्यात्मकता (घ) जटिलता

आपने क्या सीखा

- पशु-पक्षी हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं और उनके प्रति मानवीय करुणा का भाव रखना चाहिए।
- पशु-पक्षी हमारे मित्र और सहायक हो सकते हैं। यदि हम उनकी रक्षा करेंगे तो वे भी हमारे सुख-दुख में साथी होंगे। प्रेम और ममता का भाव पशु-पक्षियों या मानवेतर प्राणियों में भी उसी प्रकार होता है, जैसा कि मानव में।
- गिल्लू के व्यवहार से मन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- करुणा और समानुभूति के माध्यम से हम किसी को भी अपना बना सकते हैं, जैसे लेखिका गिल्लू को अपना बना लेती है।
- जिस प्रकार मानव में उम्र के अनुसार शारीरिक एवं व्यवहारगत परिवर्तन होते हैं वैसे ही अधिकांश मानवेतर प्राणियों में भी ये परिवर्तन होते हैं।
- इस रेखाचित्र की भाषा-शैली सहज, सरल और सरस है। भाषा प्रवाहपूर्ण है। भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज तथा अन्य भाषाओं से प्राप्त (आगत) शब्दों का प्रयोग किया गया है।
- रेखाचित्र और संस्मरण आधुनिक गद्य-विधाएँ हैं। जहाँ रेखाचित्र में चरित्र की ख़ास-ख़ास बातों के चित्रण का विशेष महत्त्व होता है, वहीं संस्मरण में स्मृति महत्त्वपूर्ण हो जाती है। रेखाचित्र का संबंध विगत और वर्तमान से होता है, जबकि संस्मरण का विगत (बीते समय) से। रेखाचित्र की अपेक्षा संस्मरण में आत्मीयता अधिक होती है।
- महादेवी ऐसी विशिष्ट रचनाकार हैं, जिनके लेखन में अभावग्रस्त मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षियों तक को गहरी आत्मीयता मिली है।

योग्यता-विस्तार

- इस रेखाचित्र की लेखिका महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में फ़र्रुखाबाद (उ.प्र.) में हुआ। उन्होंने उच्च शिक्षा इलाहाबाद (उ.प्र.) से प्राप्त की और वे आजीवन इलाहाबाद में ही रहीं। वे छायावाद की महत्त्वपूर्ण कवयित्री थीं। 'यामा' उनकी

कविताओं का प्रमुख संकलन है, जिस पर उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। 'दीपशिखा', 'नीरजा', 'नीहार' और 'रश्मि' उनके उल्लेखनीय काव्य–संग्रह हैं। कविता के साथ-साथ उन्होंने महत्त्वपूर्ण गद्य साहित्य भी लिखा। उनके संस्मरण और रेखाचित्र बहुत महत्त्व के हैं और कवयित्री के साथ-साथ एक रेखाचित्रकार और संस्मरण-लेखिका के रूप में भी उन्हें विशेष ख्याति प्राप्त है। 'अतीत के चलचित्र, 'पथ के साथी', 'स्मृति की रेखाएँ' तथा 'मेरा परिवार' उनके महत्त्वपूर्ण संस्मरण और रेखाचित्र संग्रह हैं। 'गिल्लू' उनके 'मेरा परिवार' नामक संग्रह से ही लिया गया है, जिसमें उन्होंने गिल्लू के अतिरिक्त नीलकंठ (मोर), सोना (हिरनी), दुर्मुख (खरगोश), गौरा (गाय), नीलू (कुत्ता), निक्की (नेवला), रोजी (कुत्ती) और रानी (घोड़ी) जैसे मानवेतर प्राणियों के भीतर छिपी संवेदनशीलता को चित्रात्मक रूप में व्यक्त किया है। इसके अतिरिक्त स्त्री की स्थिति और उसकी समस्याओं पर उनके लेखों का संग्रह 'श्रृंखला की कड़ियाँ' है।

पाठांत प्रश्न

1. लेखिका ने गिल्लू पाठ के आरंभ में ही सोनजुही की पीली कली को क्यों याद किया है– उल्लेख कीजिए।
2. घाव ठीक होने के पश्चात गिल्लू में कैसा परिवर्तन दिखाई पड़ा– उल्लेख कीजिए।
3. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए :

   (क) उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था।

   (ख) फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम बसंत आया। नीम-चमेली की गंध मेरे कमरे में हौले-हौले आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक्-चिक् करके न जाने क्या कहने लगीं।

   (ग) इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली।
4. गिल्लू की कौन-सी बात आपको अच्छी लगी और क्यों?
5. गिल्लू रेखाचित्र की भाषा की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
6. रेखाचित्र के अंतिम अंश में गिल्लू की मृत्यु का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है। आपने भी कभी कोई ऐसा दृश्य देखा होगा जिसका आपके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसका उल्लेख कीजिए।
7. पाठ में गिल्लू का वर्णन इस प्रकार है– "स्निग्ध रोयें, झब्बेदार पूँछ, नीले काँच के मोतियों जैसी आखें, दो नन्हें पंजे।" आप भी किसी पालतू जानवर/पक्षी/मनुष्येतर प्राणी का वर्णन इसी प्रकार की भाषा में कीजिए।

उत्तरमाला

टिप्पणी

बोध प्रश्नों के उत्तर

(1) ग (2) ख (3) ग (4) क (X) ख (√) ग (√) घ (√)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1 1. (ख)

2. (ग)

3. (क) व्यक्तिवाचक (ख) व्यवहारगत (ग) तीन माह (घ) अन्

4. नीलकंठ – मोर
   गिल्लू – गिलहरी
   गौरा – गाय
   सोना – हिरन

3.2 1. (घ)

2. (ग)

3. (ख)

3.3 1. (क) 2. (क) 3. (घ)